शिव उपासक

श्री रावण संहिता

प्रस्तुति :

ज्योतिषाचार्य—डॉ. वाई. डी. सरस्वती

साधना पॉकेट बुक्स
रोशनारा रोड, दिल्ली-110 007

रावण को नीति-ज्ञान

एक दिन प्रातःकाल शिवजी रावण के घर पधारे तो खबर पाई कि रावण सोये हैं। यह बात सुनकर शिवजी अचम्भे में हो गये पर महावीर रावण ने शिवजी को स्वप्न में देखा और शीघ्र जाग उठे। तब सेवक ने रावण से कहा कि हे स्वामी ! शिवजी पधारे हैं। यह सुन रावण दौड़कर शिवजी के चरणविन्द में गिरे और दण्डवत् करके दोनों हाथ जोड़कर विनती की कि, हे सच्चिदानन्द प्रभो ! हमसे यह अपराध अनजाने में हुआ सो आप क्षमा कर मेरी रक्षा कीजिए। यह सुनकर शिवजी ने रावण से कहा—हे रावण ! तू बड़ा बुद्धिमान और ज्ञानी है। इस समय तुझे स्वप्न अवस्था में देख बहुत सोच किया क्योंकि मनुष्य देह बहुत कठिनता से प्राप्त होती है, सो इस देह को पाकर ऐसे समय सोना बुद्धिमानों को योग्य नहीं है। शिव का यह वचन सुन रावण ने फिर विनती करके प्रश्न किया कि, हे दीनदयालो दीनबन्धो ! जो अपराध सेवक से अनजाने में हो गया है सो कृपादृष्टि से क्षमा करके अब आप आज्ञाकारी से आज्ञा करो कि कौन-कौन से अहितकारी कर्मों का त्याग करना आवश्यक है। तब शिवजी ने उत्तर दिया, मित्र ! जो बात गुप्त है और देवताओं ने भी नहीं जानी है सो तेरे आगे कहता हूं। मन लगाकर सुनो इन बातों को। तू और जो कोई रावण के इस पद को अंगीकार करेगा सो पाप बन्धन से छूटकर मुक्ति पावेगा।

[redacted] : शिवजी कहते हैं—हे रावण ! प्रातःकाल जिस समय श्री सूर्यनारायण उदय हों, उस समय मनुष्य को सोना योग्य नहीं है, क्योंकि एक पहर रात्रि बाकी रहने पर देवता का आगमन होता है इसलिए मनुष्य को चाहिये कि दो चार घड़ी सवेरे उठ परम दयालु परमेश्वर के ध्यान में मन लगा के भजनानन्द में मग्न रहे और अरुणोदय होते ही स्नान करे और पितृदेव को जल देवे जिससे श्रीसूर्यनारायण और पितृदेव बलवान होकर प्रसन्नता से आशीर्वाद देवें। जो मनुष्य इस विधि को अंगीकार करेंगे वे इस लोक और परलोक दोनों का सुख भोगेंगे।

नीति 2 : हे रावण ! एक चारपाई या बिछौने पर अपनी स्त्री के सिवाय दूसरी स्त्री के संग सोना पाप का मूल है। क्योंकि ऐसा करने से व्यभिचार होता है। यह सुनकर रावण ने हाथ जोड़ करके प्रश्न किया कि, हे कृपालो करुणानिधान ! जो कोई नतैती

अपने घर आवे, उसके पास बिछौना न हो तो क्या करना उचित है ? शिव ने कहा कि अपना वस्त्र बिछौना पर बिछाकर अकेले सोवे, कुछ दोष नहीं है।

नीति 3 : हे रावण ! विधवा स्त्री के हाथ की रसोई पाना दोष है, क्योंकि जिस स्त्री का पति मर जाये सो अधजले मुर्दे के समान हो जाती है। इस कारण उसके हाथ की रसोई पाना पाप है।

[redacted] हे रावण ! जो कोई सन्ध्या समय घर, आंगन में झाड़ू देता है, वह अवश्य दरिद्री होता है, क्योंकि वह समय लक्ष्मी जी के घर में आगमन करने का है। वह जिसके हाथ में झाड़ू देखती हैं उसको श्राप देकर चली जाती हैं।

नीति 5 : हे रावण ! जो मनुष्य एकादशी या और कोई व्रत धारण कर स्त्री के पास जाये तो व्रत का फल नहीं पाता है, यह सुन रावण ने दोनों कर जोड़ के प्रश्न किया है, जगदीश्वर ! व्रत के दिन यदि स्त्री त्रिदोष कर्म से निवृत्त होकर स्नान करे और पुरुष उसके पास न जाये तो महापातकी होता है और जाये तो व्रत निष्फल हो, इसमें क्या करना चाहिए ? शिवजी ने कहा कि अर्द्धरात्रि बीतने पर जाये तो कुछ दोष नहीं, क्योंकि रात्रि के पिछले दो प्रहर अगले दिन में गिने जाते हैं।

[redacted] : हे रावण ! पूर्व रात्रि का दीपक बाती जलने से बाकी बचे तो उस बाती को दूसरे दिन न जलावे, यदि जलावे तो महापाप है। इस पाप से मनुष्य की स्त्री बहुत काल तब बांझ रहेगी। रावण ने शिव के मुखारविंद से यह नीति सुनकर पश्चाताप किया और चकित हुए, फिर दोनों कर जोड़कर विनती की कि हे अनाथों के नाथ, दयासिन्धो, आपने जो नीति दी उसके सुनने से दास के मन में अति आनन्द प्राप्त हुआ। कृपा करके कुछ और नीति-ज्ञान दीजिए।

[redacted] हे रावण ! जो मनुष्य सूर्य के सम्मुख होके दन्तधावन या कुल्ला करे तो वह महापातकी है। अन्तकाल नरक में जाता है, क्योंकि सूर्य, अग्नि और जल ये तीनों बड़े देवता हैं, जो मनुष्य उक्त प्रीति की रीति से इनका पूजन करेगा उसको यज्ञ करने का फल प्राप्त होगा। रावण ने यह प्रश्न किया कि, हे घनश्याम, चतुर्भुज स्वरूप ! इन देवताओं का पूजन किस विधि से प्रतिदिन करना चाहिये सो कृपाकर कहिये। तब श्री शिवजी ने कहा–व्रत न कर सके तो उस दिन नमक न खाये और प्रातःकाल स्नान करके अपने इष्टदेव का ध्यान और स्मरण करे, फिर शर्करा, घृत, तिल आदि सामग्री से अग्निदेव का पूजन करे। यदि इस भांति न कर सके तो रसोई हो जाने पर रसोई की सामग्री से विधि सहित पूजन करे। जल देवता को प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनकर धूप चढ़ावे। सात दिन जो मनुष्य इस भांति इन दोनों देवताओं का पूजन करे तो इनके आशीर्वाद से इस लोक में धन, सन्तान और परलोक में बैकुण्ठ धाम पाता है।

[redacted] : हे रावण ! मनुष्य को चाहिए कि जलते दीपक को बुझावे नहीं और जो कोई पुरुष दीपक से दीपक जोड़े तो वह पातकी होता है।

[redacted] हे रावण ! व्रती मनुष्य चारपाई पर सोवे तो व्रत निष्फल जाता है, क्योंकि जिस देवता का व्रत धारण किये हो सो देवता व्रत के दिन मनुष्य की देह में

वास करते हैं इसलिए व्रत के दिन स्वच्छता से रहे और चारपाई पर नहीं पृथ्वी पर सोवे, स्त्री से अलग रहे, एक बार फलाहार कर कुछ ब्राह्मण को देवे तो देवता प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं और व्रत फलदायक होता है।

[redacted] : हे रावण ! व्रत के दिन किसी को अपना जूठा न देना चाहिए, क्योंकि जो कोई जूठा खायेगा तो व्रत के फल का भागी होगा, यह बड़ा दोष है।

नीति 11 : हे रावण ! जो मनुष्य रसोई के मध्य अर्थात् कुछ सामग्री बनानी बाकी रह गई हो, तभी जल्दी करके रसोई खाने लग जाये तो दोष है, जब तक रसोई तैयार न हो जाये और अग्निदेव को भोजन न करा ले तब तक किसी को रसोई में से अग्नि न देवे और जिस रसोई में थाल आदि कोई पात्र न हो, इन तीनों के कारण उनमें न्यारे-न्यारे महापाप हैं। वह मनुष्य सदा दरिद्र रहेगा इसलिये मनुष्य को चाहिये कि, जब रसोई की सब सामग्री तैयार हो जाये तब स्वच्छात से प्रथम चौरस आसन पर बैठकर अग्नि मुख के द्वारा पूर्ण ब्रह्म परम दयालु परमेश्वर को भोजन करावे फिर अन्नदेव को नमस्कार कर एक अभ्यागत को रसोई की सामग्री का भोजन करावे और यदि सामग्री अधिक नहीं हो तो थोड़ी-थोड़ी सब सामग्री अभ्यागत के निमित्त रखकर रसोई भोजन करे तो इस महापुण्य के प्रताप से और अग्नि के आशीर्वाद से वह नर सदा सुखी रहेगा।

[redacted]: हे रावण ! जो मनुष्य तांबे के पात्र को जूठाकर अशुद्ध करे या अशौच स्थान में ले जाये सो अंतकाल नरकवासी होता है, क्योंकि सब धातुओं में तांबा महापवित्र है, इसलिए जो मनुष्य तांबे के पात्र में जल भर स्नान करे सो गंगाजल के समान फल पाता है। तिल, अन्न, जल अर्पण करे तो महापुण्य है।

नीति 13 : हे रावण ! जो मनुष्य ब्राह्मण और परनारी से मैथुन करे और उससे कदाचित् किसी स्त्री को गर्भ रहे और पुत्र पैदा हो तो उस पापी मनुष्य के पितृदेव जो अपने शुभ कर्म करने के कारण बैकुण्ठधाम में वास करते हों तो बैकुण्ठ से नरक में वास करने लग जाते हैं। व्रत, तर्पण और श्राद्ध से सदा विमुख रहना सबसे भारी पाप है।

नीति 14 : हे रावण ! जो मनुष्य स्त्री से संग करके अपवित्र रहे तो इस पाप से अन्तकाल नरक में जाता है, इसलिये उसका पांव पृथ्वी पर धरना ऐसा है, जैसे पितरने के शिर पर धरा हो।

[redacted] : हे रावण ! अमावस्या को वृक्ष की डाली या पत्ती तोड़ना ब्रह्महत्या के समान है और उस दिन दन्तधावन करना भी पाप है।

[redacted] : हे रावण ! जो कोई परदेशी या अभ्यागत कुछ याचना करे तो अपनी श्रद्धा के अनुसार उसको देवे, विमुख न जाने दे तो महापुण्य है।

[redacted] : हे रावण ! जो मनुष्य अपने घर में टूटी खाट, फूटे बर्तन रखते हैं, वे दरिद्र होते हैं।

[redacted]: हे रावण ! जो मनुष्य नारायण का नाम लेकर खाया-पिया करे और चलते-फिरते उठते-बैठते जो काम करे, परमेश्वर का नाम लेके करे तो इस महा

सुकर्म फल से इस लोक में सुखों का परम आनन्द पाता है। यह नियम महापुनीत है और जो मनुष्य चलते-फिरते, डगर बात में बार-बार जो मन में आवे सो लेकर खावे और परमेश्वर का नाम न उच्चारण करे तो दोष है, वह विपत्ति के बन्धन से कभी नहीं छूटता।

नीति 19 : हे रावण ! किसी मनुष्य के संग एक पात्र में भोजन करना बड़ा दोष है क्योंकि न जाने पूर्व के जन्म में वह मनुष्य कौन-सी दशा में था। भोजन करने के कारण उसके पूर्व जन्म की कीर्तियां अन्तःकरण में प्रकट हो जायेंगी, इसलिये ऐसे नीच काम को अंगीकार न करना चाहिये।

नीति 20 : हे रावण ! भोजन करने के समय अन्न देवता मुख में पधारते हैं, इसलिए मौन धर भोजन करना उचित है, क्योंकि बोलने बतलाने से मिथ्या वचन मुख से निकलें तो अन्नदेव के क्रोध से इसी जन्म में विपत्ति में बंधे। इसलिए मनुष्य को चाहिये कि एक चित्त होकर चौरस बैठकर दाहिने बायें देख और अन्नदेव की बड़ाई करके भोजन करे तो इस कर्म से वह सदा सुखी रहे। रावण ने प्रश्न किया कि—हे जगदीश जगगुरुरो ! भोजन करते समय कुछ कहना किसी से आवश्यक हो तो कैसे कहना चाहिये ! श्री शिव जी ने आज्ञा दी कि बोलना आवश्यक हो तो मन में अन्नदेव से प्रार्थना करके सच्चिदानन्द भगवान् का नाम लेकर पांच ग्रास ले और आचमन करके बोले और किसी की बुराई न करे और न खोटा वचन बोले।

नीति 21 : हे रावण ! जो मनुष्य अपनी विवाहिता अर्द्धांगिनी परम हितकारिणी स्त्री से विपरीत ठानकर अपने मुख से उसकी बुराई करे और खोटा वचन बोलके मन को दुःख रूपी अग्नि से दहे तो इस पाप से लोक में तो क्लेश बन्धन में रहे और परलोक में नरक में जाके वास करता है, क्योंकि जिस समय विवाहित स्त्री के गर्भ से पुत्र उत्पन्न होता है, उस समय उसके पितृदेव कदाचित् नीच कार्यों के फल से नरकवासी हों तो पाप मोचन ऐसे पुत्र की परम प्रसन्नता से नीचे कर्मों के भोग से मुक्ति पाके बैकुण्ठ को सिधारकर बार-बार आशीर्वाद दिया करते हैं इसलिये मनुष्य को चाहिए कि अत्यन्त प्रेम से विवाहिता स्त्री को रखे और स्त्री भी मन, कर्म, वचन से अपने पति के समान सुन्दर हितकारी किसी को न जाने। विवाहिता पाप पुण्य की संगिनी है, इसलिये उसके पाप और पुण्य से पाप पुण्य की बढ़ती होती है, कदाचित् उससे अपराध हो जाये तो पुरुष को चाहिये के उस पर क्रोध न करके सदा प्यार से नीति देता रहे और मन को प्रसन्न रखे। शीलवन्ती स्त्री को चाहिये कि अपने पति को ईश्वर के सामन जानकर उसकी सेवा में मन को अर्पण करे और पतिव्रत धर्म का साधन रखे। पति कैसा भी कठोर, निर्दयी क्यों न हो पर उसको ईश्वर के समान जाने, जैसे सम्पत्ति में वैसे ही विपत्ति में प्रसन्नता सहित पति की आज्ञा न मोड़े और दुःख-सुख में जिस विधि से परमेश्वर रखे वैसे परम प्यारे पति की प्रसन्नता का उपाय करती रहे और अपनी श्रद्धा के अनुसार सुन्दर वस्त्र और आभूषण से अपने अंग को सुशोभित करके पुरुष के मन को प्रमुदित रखे, जिससे पुरुष का मन पर नारियों पर न जाये और अपने धर्म-कर्म में सावधान रहे, इस विधि से जो स्त्री-पुरुष आपस में प्यार, प्रीति से रहेंगे,

वे इस लोक में सुख को भोगकर अन्तकाल में वैकुण्ठ धाम पावेंगे।

नीति 22 : हे रावण ! दीपक व सूर्य की ज्योति से खाट की छाया मनुष्य की देह पर पड़े तो दोष है।

नीति 23 : हे रावण ! मनुष्य किसी से दुष्टता और किसी को मारने का उपाय करे तो इस पाप से नरक वासी होता है।

नीति 24 : हे रावण ! रूखी रोटी घृत बिना भोजन करना क्या है। मानो प्रेत के संग भोजन करना है, क्योंकि जिस रसोई में घृत बिना सामग्री बने वहां प्रेत निवास करते हैं और उस घर में दरिद्र का वास होता है, इसलिये मनुष्य को उचित है कि रसोई श्रद्धा भक्ति के अनुसार घी लगा के रोटी खाय, घी की गन्ध से प्रेत बाधक नहीं होते, दीपक हाथ में लेकर रसोई बनावे या कुछ और काम करे तो उसको दीपक श्राप देता है और दोष होता है क्योंकि वह अग्नि मुर्दा के समान अशुद्ध है।

नीति 25 : हे रावण ! यदि मनुष्य प्रातः और संध्या समय देहरी पर बैठे तो उसके घर से पुण्य दान हटकर सम्पत्ति घटती है और ऋण बढ़ता है।

नीति 26: हे रावण ! जो कोई प्रातः काल कूड़ा को बिना साफ किये ही घर लीपे तो उस अहंकारी धनवान् की सम्पत्ति लक्ष्मीजी के श्राप से थोड़े ही दिन में जाती रहेगी।

नीति 27 : हे रावण ! यदि मनुष्य बाग, तालाब और नदी के किनारे दिशा जावे तो बहुत काल नरक में पड़े।

नीति 28 : हे रावण ! जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाय, व्रत न रखे तो उसका जीवन पशु के समान है, अन्तकाल पंचहत्या का अपराधी होकर नरक में वास करता है, इसलिए मनुष्य को उचित है कि एकादशी का व्रत धारण कर दिन भर श्रीदीनदयालु के ध्यान में रहे और रात्रि को जागरण करे तो उसके पापों का नाश होकर पितृगण स्वर्ग को जाते हैं। यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे दीनदयालो ! व्रत के दिन अन्न खाय तो वह इस पाप से कैसे मुक्ति पावे ? शिवजी बोले, भोजन करते भी जानजायतो ग्रास रख (तुरन्त भोजन त्याग) भी व्रतधारे तो व्रत का पूर्ण फल प्राप्त करे और यदि कदाचित् निर्जल न रह सके तो गाय के दूध के सिवाय और आहार न करे तो यज्ञ के समान फल है। एकादशी को अन्न खाना कीड़े के समान है, जितने चावल खाये उतनी हत्या सिर पर चढ़े। यदि न रह सके तो भी एकादशी को चावल खाना दोष है, क्योंकि एकादशी को सारे पाप अन्न में बसते हैं। रावण यह गुप्त वार्ता सुनकर कम्पित हो महाशोक समुद्र में डूब गया तब तो शिव जी ने उसको शोकनीय अवस्था में दुखी जान अति दयालुता से उसके मन का क्लेश मिटा के आज्ञा दी कि, हे रावण ! आज जो तुमसे नीच कर्म बन आये हैं उनके लिये यह गुप्त भेद तुमसे प्रगट किया है। मन लगाकर जो इसको अंगीकार करे तो उसके काम आवे। रावण बोला— आपने जो संसार सागर से पार उतारने की यह नीतिरूपी नौका निज मुखारविन्द से आज्ञा की है उसकी महिमा गाने का मेरा क्या अनुमान है। जहां पर शेष, दिनेश, वेदादिक भी पार न पा सके, हे दयानिधान, सो हे नाथ ! मेरी रक्षा करो अर्थात् और कुछ आज्ञा

कीजिये। तब शिवजी ने रावण को परम अधिकारी जान के आज्ञा की।

नीति 29 : हे रावण ! जो मनुष्य रजस्वला स्त्री से मैथुन करे सो इस पाप के कारण संसार में रोगग्रस्त रहे और अन्तकाल नरक में जाकर हजार वर्ष से अधिक वास करे, कारण यह है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन ब्रह्महत्यारी, दूसरे दिन चंडालिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान होती है। इन दिनों में उसके वस्त्र छूने और मुख देखने में पाप लगता है। कदाचित् रजस्वला स्त्री के हाथ का कोई मनुष्य भोजन करे तो अपनी अवस्था में जितना व्रत, पुण्य और दान किये हो सो सब नाश हो जाता है, इसलिए मनुष्य को चाहिये कि चौथे दिन स्नान करे तब स्त्री के पास जाये और चतुर्थ दिन स्त्री संगम न करे तो एक मनुष्य मारने की हत्या होती है। यह सुनकर रावण ने विनती कि हे अन्तर्यामी ! जिस स्त्री का पुरुष परदेश हो तो इस पाप से कैसे मुक्ति पावे ? शिवजी ने कहा कि यदि पुरुष घर न हो तो स्त्री को चाहिये कि स्नान करके सूर्य के सम्मुख स्थित हो अपने पति की सूरत मन की आरसी में देख ले तो उसका पति इस पाप से मुक्ति पावे।

नीति 30 : हे रावण ! जिस मनुष्य से कोई जीव किसी पदार्थ का भोजन मांगे और वह जीव को विमुख रखे तो इस दोष के कारण वह मनुष्य इस जन्म में सदा दुखी और निराश रहे फिर मृत्यु समय जीव उसी पदार्थ में जाकर प्राप्त हो। यह सुन रावण ने प्रश्न किया कि हे नाथ ! निर्धन मनुष्य जीव की प्रसन्नता कैसे करे ? शिवजी ने कहा कि निर्धन मनुष्य जीव की प्रसन्नता के लिए रविवार को जन्म नक्षत्र में या अमावस्या के दिन श्रद्धा के अनुसार मनमाने पदार्थ का भोजन अभ्यागत को दान करे तो परमेश्वर उसकी कामना पूर्ण करें।

नीति 31 : हे रावण ! मनुष्य किसी की कोई वस्तु पुण्य देकर अथवा और भांति लेवे और भूल से अहंकार के कारण नहीं दे तो महापाप है! अगले जन्म में देगा, उस मनुष्य को उचित है जो मुख से कहे सो पूरा करे।

नीति 32 : हे रावण ! मनुष्य कुछ लेकर बेटी का ब्याह करे तो इस पाप के फल से सदा दरिद्र रहे और उसके तर्पण से पितर विमुख हो नरक में जाएं।

नीति 33 : हे रावण ! कोई मनुष्य किसी से कुछ मांगे और वह दे देवे तो इस पुण्य का फल अश्वमेघ यज्ञ के समान है क्योंकि जीव की प्रसन्नता भी परमेश्वर की प्रसन्नता का कारण है।

नीति 34 : हे रावण ! मनुष्य को चाहिये कि किसी से कुछ मांगे नहीं, परम दयालु परमेश्वर ने जो दिया है उसी में संतोष रखे।

नीति 35 : हे रावण ! मनुष्य कामना के अर्थ चारपाई या चौकी पर बैठकर ब्रह्म जगदीश का पूजन करे तो फलदायक नहीं होता इसलिये मनुष्य को उचित है कि खूब पवित्र स्थान में ऊन, वस्त्र, मृगछाला, कुशासन पर स्त्री सहित बैठे, पूर्व या उत्तर की ओर मुखकर त्रिलोकी नाथ के स्नान, ध्यान और स्मरण में मन लगावे तो फलदायक होता है।

नीति 36 : हे रावण ! जो मनुष्य श्री गंगाजी के तट या और कोई तीर्थ स्थान

में मूर्ति दर्शन को जाकर पर स्त्री पर कुदृष्टि करता है तो इस पाप से कभी नहीं छूटता। अन्तकाल में यम के दूत उस पापी को नरक में ले जाकर पतली सींक उसकी देह में लगा उसे अनेक प्रकार से संताप देते हैं। यह सुन के रावण ने शिवजी की स्तुति कर विनती की। हे जगदगुरो ! कृपा करके कुछ और आज्ञा कीजिये जिससे अज्ञानता दूर हो और दीपक रूपी हृदय कमल होवे।

नीति 37 : हे रावण ! जो मनुष्य श्री गंगा जी के स्नान को पनही पहिने जाये तो गंगाजी के स्नान का फल नहीं पाता।

नीति 38 : हे रावण ! जो मनुष्य चार मनुष्यों में बैठकर कुछ सामग्री मंगाये, अकेले भोजन करे तो इस पाप के कारण से मुक्ति नहीं पावे, दोष है।

नीति 39 : हे रावण ! जो मनुष्य एक बार द्वादशी अमावस को व्रत रख खिचड़ी खावे तो इस पाप के कारण और पदार्थों से विमुख रहे और सन्तान न होवे।

नीति 40 : हे रावण ! द्वादशी को पुराण का श्रवण और पाठ अयोग्य है क्योंकि उस दिन व्यासजी दिन भर परमेश्वर के पूजन ध्यान में मन को स्थिर कर बैठते हैं कदाचित् कोई पुराण बांचे तो उनका मन ध्यानावस्था में पुराण की ओर चलायमान होता है।

नीति 41 : हे रावण ! व्रत के दिन और आदित्य वार को दर्पण में मुख देखना अयोग्य है। तिलक लगाने के समय देखे क्योंकि तिलक नारायण रूप है।

नीति 42 : हे रावण ! जिस चारपाई पर मनुष्य विवाहिता स्त्री के संग सोवे उस पर उसका भाई बैठे या और किसी को देवे तो महादोष है।

नीति 43 : हे रावण ! जो मनुष्य किसी से तिल लेके भोजन करे तो बड़ा दोष है। यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे दयालो ! कदाचित् कोई हितू आदि तिल खिलावे तो किस रीति से दोष निवृत्त होय ? शिवजी ने कहा कि प्रथम तो भोजन न करे और करे भी तो उसके बदले उसको खिला दे, नहीं तो ब्राह्मण को देवे क्योंकि तिल दान का ब्रड़ा फल है।

नीति 44 : हे रावण ! जो नर नंगा होकर जल लेवे तो अपवित्र रहे और सुकर्म जाये।

नीति 45 : हे रावण ! जो मनुष्य मन को रोक, एक चित्त हो, प्रीति भाव से कथा श्रवण करते हें, वे बैकुण्ठ में नाना प्रकार के सुख पावेंगे।

नीति 46 : हे रावण ! जो कोई किसी की अमानत धरी हुई चीज को अपने कब्जे में कर मुकर जाये तो अन्तकाल में नरक जाकर दु:ख भोगे और स्त्री उसकी बांझ होवे।

नीति 47 : हे रावण ! मनुष्य अपनी विवाहिता स्त्री का त्याग करके और बाजार की नीचों से मैथून करे तो इन पापों से नरक में जाय और उसकी संतान बेऔलाद रहे।

नीति 48 : हे रावण ! जिस समय कर्जदार के घर लेनदार आकर अपने रुपये का तगादा करे और क्रोधवश सौगन्ध खाकर द्वार पर बैठ जाए, उस समय कर्जदार यदि अन्न जल खाये तो उस पाप से महादोषी होकर जन्मभर दरिद्री और विपत्ति में

रहे।

नीति 49 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने कुटुम्ब या नातेदार की बुराई करे तो इस पाप के कारण पुत्र का मुंह नहीं देखे।

नीति 50 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने मुंह से अपनी स्तुति करे और औरों से अपनी स्तुति सुन के प्रसन्न हो तो अन्तकाल नरक में जाये।

नीति 51 : हे रावण ! जो बाग के वृक्षों को काटे और ताल, पोखर को माटी से पाटे और कोई विद्या पर ध्यान न देवे तो इस पाप से नरक में जाये, मुक्ति न पावे।

नीति 52 : हे रावण! जो मनुष्य बैल या घोड़े को बधिया करे तो सन्तान का मुख न देखे और अगले जन्म में हिजड़ा होवे और बड़ों के सुकृत से आप हिजड़ा न हावे तो उसके पुत्र नपुंसक हों इसके समान और कोई पाप नहीं है।

नीति 53 : हे रावण ! रुपये के बदले धरती को अपने कब्जे में लावे सो इस पाप के कारण अंधा हो और सन्तान का सुख न पावे या पुत्र जवान होकर मर जाये।

नीति 54 : हे रावण ! पिता, बड़े भाई और जो उम्र में बड़े हों उनको कटु वचन बोले तो महापाप हो।

नीति 55 : हे रावण ! जो नर चरती गाय को जंगल से भगावे तो मुक्ति नहीं पावे और निपुत्री रहे।

नीति 56 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने स्वामी या पिता के संग युद्ध में जाये और कायरता से उनको छोड़ भागे तो इस पाप से सब शरीर जकड़ के गल जाये।

नीति 57 : हे रावण ! जिस मनुष्य ने अपनी अवस्था भर में गंगाजी या और तीर्थ में स्नान नहीं किया तो उस मनुष्य का जीवन इस संसार में पशु के समान है। इसलिये मनुष्य को आवश्यक है कि स्त्री सहित तीर्थ में स्नान करके जो हो सो पुण्य करे तो अश्वमेघ यज्ञ का फल पावे और उससे पुरुष सदा सुखी रहे। यह सुन रावण ने प्रश्न किया, हे जगदीश ! जिसको नातेदार की लज्जा या नातेदारी से तीर्थ में स्नान स्त्री सहित न हो तो उसका कर्तव्य है ? शिवजी बोले कि जब पूर्णमासी या संक्रान्ति या पुण्यव्यतीपात सिद्धयोग अमावस्या जन्म नक्षत्रादि शुभवार आवें तब स्त्री सहित किसी नदी या तालाब या कुएं पर हौदे या घर में स्नान करके जो कुछ श्रद्धा हो सो पुण्य करे तो यज्ञ के समान पुण्यदायक हो और पिछले पापों से मुक्ति पाकर वैकुण्ठ पावे। हे रावण ! यह वार्त्ता गुप्त है। चारों वेदों में जो फल कहा है, सो तेरे आगे कहा है।

नीति 58 : हे रावण ! मनुष्यों को उचित है कि किसी का पर्दा न उघारे, दोष है।

नीति 59 : हे रावण ! मनुष्य ब्याई हुई गौ के बछड़ा को न्यारा करके दूध दुहे और चिखावे नहीं तो बहुत काल निपुत्रा रहे।

नीति 60 : हे रावण ! अपने कबीले को घायल करना, जीव को मारना या उसकी बुराई करना बड़ा पाप है।

नीति 61 : हे रावण ! जो किसी के ऊपर कब्जा करे तो अवश्य उसकी स्त्री

बांझ और कुष्ठी होय। जन्मभर निपुत्री रहे और यदि सुपुत्री होकर जीवे तो विधवा होय, पानी देने वाला कुल में न रहे, अन्धी होय, सदा दुखित रहे।

नीति 62 : हे रावण ! जो मनुष्य चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण में अन्न जल ग्रहण कर, मलमूत्र करे पानी भरे तो महादोष है चन्द्रमा और सूर्य के श्राप से धन, सन्तान का सुख नहीं पाता। नरक में जाता है।

नीति 63 : हे रावण ! जो मनुष्य दिशा जाकर बचे हुए जल से हाथ पांव धोवे तो महादोष है। उसके कुल के मनुष्यों प्रेत दुखी करते हैं क्योंकि वह जल प्रेत के भोग का है, भूलकर भी ऐसा न करना चाहिए।

[redacted] : हे रावण ! जिस मनुष्य के सन्तान नहीं हो उसका जीवन संसार में तुच्छ है, यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे स्वामी ! पुत्रहीन मनुष्य को किसके हाथ का तर्पण पहुंचे। शिवजी इस बात पर हंसे और कहा कि हे रावण, यह गुप्त वार्त्ता है जो तेरे आगे कहता हूं देवता भी नहीं जानते इस पर अमल करना यज्ञ के तुल्य फलदायक है। जो निपुत्रे मनुष्य की स्त्री सुखी हो और प्रीति-भाव से मन को शुद्ध कर तर्पण करे तो उसके पति को पहुंचे और उसको कदाचित् अपने पापों के वश नरक होवे तो भी मुक्ति पावे।

[redacted] : हे रावण ! द्वादशी, अमावस्या तथा रविवार को शरीर में तेल मलने से महादोष है।

नीति 66 : हे रावण ! गृहस्थी के घर में पीपल, इमली आदि वृक्षों को नहीं रखना चाहिए क्योंकि प्रतिदिन एक बार पितृ देवता अपने पुत्र के घर में आते हैं जो ब्राह्मण को मिठाई खाते देखें तो प्रसन्न हो आशीर्वाद देवें और वृक्ष के देव भूतादिक वास देखकर उसके डर से घर में नहीं आते श्राप दे जाते हैं सो वह मनुष्य निर्धन होके सदा दु:खी रहता है इसलिए घर में वृक्ष रखना या अंडी के तेल का दीपक पीपल के नीचे बारना अशुभ है।

नीति 67 : हे रावण ! मनुष्य बड़ी कठिनाई और बड़े जप तप से फल को प्राप्त होता है। इस देह में पाप के अंहकार की फांसी गले में मेलना अयोग्य है, देखो सदा शिर के बाल तो मौत के हाथ में रहते हैं और न जाने कि किस समय शरीर से जीव न्यारा हो जाय इस पर भी यदि मनुष्य कहे कि अभी लड़के हैं। जवान से बुढ़ापे में भजन किया जायेगा यह भूल हैं, क्षणभर भी देह में झूठा भरोसा न करें। मनुष्य को उचित है कि क्रोध, ल : को त्याग कर अहंकार और बुराई से अलग रहे। ईश्वर ने जो कुछ दिया है उसमें संतोष रखे। हर्ष और हानि लाभ, भले-बुरे को समान जाने। सब जीवों में पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर को एक-सा देखे और सदा सच्चिदानन्द नारायण के ध्यान स्मरण में मन लगावे, महाप्रसन्न रहे क्योंकि अन्तकाल माता-पिता और भाई सहायक नहीं होते केवल सुकर्म ही सहायक होता है।

नीति 68 : हे रावण ! जिस मनुष्य ने पीपल को प्रतिदिन जल नहीं चढ़ाया और महादेव का व्रत पूजन नहीं किया उसका शरीर पशु के समान है, सदा निर्धन और दु:खी रहे। यह सुन रावण ने प्रश्न किया कि हे वासुदेव ! किसी को नित्य पूजन नहीं

प्राप्त हो तो क्या करे ? शिवजी ने कहा—शनिवार को वृक्षराज पीपल की जड़ में ब्रह्मा, त्वचा में विष्णु, शाखा में महादेव और पात-पात में देवता का वास होता है और [redacted] जो मनुष्य हर शनिवार को नियम करके पीपल का पूजन श्रद्धा-भक्ति से करता रहे और कभी पीपल के नीचे ब्राह्मण को भोजन करावे आप भी भोजन करे तो इस पुण्य से देवता का आशीर्वाद पाके धन, सन्तान का सुख पावे और महापुण्य हो, कदाचित् पुरुष व्रत रखे और उसकी स्त्री इस रीति से महादेव का प्रीति सहित पूजन करे तो पुण्य है, जो कहने में नहीं आता। यह वार्ता सुनकर अति प्रसन्नता से हाथ जोड़ रावण बोला कि हे महाराज ! इसके सुनने से बड़ा आनन्द होता है। शिवजी ने कहा—रावण, पुनीत वार्ता वेदों का सार तेरे आगे कहा और अब जो कहता हूं चित्त लगाके सुनो।

नीति 69 : हे रावण ! जो मनुष्य स्नानकर गाजर और महुआ के तले जाये तो चौथाई फल वृक्ष को मिले। यह सुनकर रावण ने कारण पूछा। शिवजी ने कहा—नरसिंह अवतार में हिरण्यकशिपु दैत्य के पेट को नखों से फाड़ डाला तब नरसिंह जी के नखों में ज्वाला उठी सो उन्हें महुआ और गुलर के वृक्ष ही दृष्टि पड़े तब दोनों पंजे वृक्षों में लगाने से नाखूनों की ज्वाला मिट गई। उस समय नरसिंह जी कृपादृष्टि से उनको आज्ञा दिये कि जो स्नान करके तेरे नीचे आवे उसके स्नान का चौथाई फल उन वृक्षों को मिले। रावण ने प्रश्न किया कि हे स्वामी ! जो मनुष्य भूल से चला जाए तो कैसे उसके नीचे फल पावे ? शिवजी ने कहा कि तीन बार नरसिंह जी का नाम लेवे तो वृक्ष को फल न पहुंचे।

नीति 70 : हे रावण ! स्नान करके चारपाई पर बैठने से और बाहर जाने तथा औरों से मिलाप करने से स्नान का फल जाता रहता है। स्नान करके कुछ खाय के जहां चाहे जाये तो कुछ दोष नहीं।

नीति 71 : हे रावण ! आम के वृक्ष तथा बाग के वृक्ष काटने का दोष ब्रह्महत्या के समान है और बाग लगाने का पुण्य हजार यज्ञ के समान है इसलिए उचित है कि सम्पूर्ण बाग लगाने की सामर्थ्य न हो तो सिर्फ मेवा के पांच वृक्ष सुठौर में लगा जीवन सुफल करे, क्योंकि वृक्ष लगाने का पुण्य अश्वमेघ यज्ञ के समान है। जब मेह बरसता है तो उन वृक्षों के पत्तों से जल की बूंदें पृथ्वी पर पड़ती हैं उसका पुण्य होता है : जैसे पतिव्रता स्त्री की अपने पति की सेवा पुण्य फलदायक है, उसी प्रकार इस पुण्य की महिमा कहने में नहीं आती जो लगावे उसके पांच पुश्त के पुरुष बैकुण्ठ में वास पावें।

नीति 72 : हे रावण ! जो मनुष्य तुलसी जी का वृक्ष अपने घर में रखे या प्रति दिन स्नान करके जल से सीचे, चन्दन, अक्षत, पुष्पों से पूजन करे या रात को दीपक जलाये तो उसके घर में भूत नहीं आते, लक्ष्मी का प्रकाश रहता है। यह अश्वमेघ यज्ञ के समान फलदायी होता है जो कदाचित् नित्य नहीं बने तो कार्तिक में अथवा अगहन में प्रतिदिन पूजन करे व आंवला के वृक्ष तले जाकर ब्राह्मण को भोजन करावे तो उसे अश्वमेघ यज्ञ के समान फल हो। आदित्यवार को आंवला न पूजे, दोष है।

नीति 73 : हे रावण ! जिसके घर बांझ स्त्री हो उसको संसार में नरक है। उस

स्त्री के हाथ का जल पीवे तो महादोष है। इस पाप की मुक्ति नहीं होती और उस जन्म में उसके मुख से दुर्गन्ध निकलती है। यह सुन रावण ने प्रश्न किया जो ऐसी स्त्री अपने कुटुम्बों में या नाते में हो और कुछ खिलावे तो कैसे पाप से मुक्ति हो ? शिवजी ने कहा जो भोजन करते समय प्रथम अनन्त परब्रह्म का नाम लेके प्रार्थना करे और अधमोचन, अधम उद्धारण एवं ज्योति स्वरूप का नाम लेके जल पृथ्वी पर डाले और भोजन करे तो दोष नहीं।

नीति 74 : हे रावण ! जो मनुष्य पानी का लोटा व घड़ा किसी दूसरे के लिए उसके हाथ से ले पृथ्वी पर धरकर आप पिये तो दोष नहीं है।

नीति 75 : हे रावण ! जो मनुष्य जिस पात्र में भोजन करे उसको मांजे नहीं और बचे हुए जूठन को उसी पात्र में रखे तो महादोष है, अन्न के शाप से वह मनुष्य सदा दरिद्र और दुःखी रहे।

नीति 76 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने घर और आंगन को प्रतिदिन झाड़-बुहार कर साफ नहीं रखते, वे महादोष के कारण पितृ देवता के शाप से छः महीने में गरीब हो जाते हैं। यह बात भी जाननी चाहिये कि पुत्र के कार्यों से पितृदेव बैकुण्ठ या नरक में जाते हैं।

नीति 77 : हे रावण ! नदी या कुआं छोड़ घर में ताजे जल से स्नान करना सुफल नहीं होता। यह सुन रावण ने प्रश्न किया ? नदी, हौदा, कुआं न मिले तो कहां स्नान करना उचित है ? शिव ने कहा कि ताजे जल में हाथ न डाले तो गंगाजल के समान होव और हाथ डाले तो मद के समान है। हे रावण, तन में ध्यान धरना बड़ा कठिन है परन्तु जो कोई भगवान् के भक्त बुद्धिमान हैं सोई मन को शुद्ध करके ध्यान करते हैं। यह सुनकर रावण ने बड़ा सोच किया और शिवजी के चरणविन्द में विनती की कि हे सच्चिदानंद जगद्गुरो ! ये बातें कुछ तो समझ में आई हैं कुछ नहीं आई हैं सो कैसे अन्त समय पर मुक्ति पावेंगे। शिवजी ने रावण को शोक समुद्र में डूबा देखा तो अति दयालुता से दिलासा देके आज्ञा की कि सोच मत कर, धीरज धर के ध्यान कर। इन बातों से पाप कटकर उद्धार होगा।

नीति 78 : हे रावण ! जो मनुष्य स्नान करके तिलक नहीं लगाते उनका स्नान करना पशु के समान है और कदाचित् ब्राह्मण तिलक न का तो उसको दण्डवत करना अयोग्य है और बिना तिलक किये ब्राह्मण का माथा देखना बड़ा दोष है। तिलक देख के यमदूत डरते हैं।

नीति 79 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने तन को संकल्प, विकल्प करके निशिदिन शोक समुद्र में डूबा रहे तो सुख को स्वप्न में भी न देखे इसलिये मनुष्य को उचित है कि होतव्यता पर दृष्टि करके सुख-दुःख को समान जान और ईश्वर के स्मरण भजन में सदा प्रसन्न रहे।

नीति 80 : हे रावण ! मनुष्य की देह बहुत कठिनता से प्राप्त होती है। कदाचित् दही का भोजन प्रतिदिन प्राप्त नहीं होये तो पूर्णमासी को दही का अवश्य भोजन करना चाहिये इसका महापुण्य है।

नीति 81 : हे रावण ! जो मनुष्य मसूर, बैंगन, लहसून खाता है तो उसको नरक में ठौर नहीं मिलता क्योंकि इसके बीज पेट में 21 दिन तक रहते हैं। 21 दिन में यदि मृत्यु हो जाये तो नरक में बास मिले। यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे त्रिलोकी नाथ ! किसी ने इनमें से एक वस्तु खाई और मृत्यु आ पहुंची तो कैसे यह पाप जाये। शिव ने कहा, गंगाजल पी ले तो उस वस्तु का दोष धट से निकल जाता है और दोष से निवृत्त हो जाता है।

नीति 82 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने घर में एक दीप आठों पहर जलाये रखे, किसी समय बुझने न दे तो पितृदेव अति प्रसन्नता से आशीर्वाद देते हैं और अगले जन्म में भगवान की कृपा से सन्तान का सुख पाकर अन्त समय बैकुण्ठ धाम पाते हैं।

नीति 83 : हे रावण ! जो मनुष्य भोजन करके बचे जूठन को दूसरी बार खाये अथवा किसी को खिलावे तो इस महापाप से अवश्य दरिद्री होता है।

नीति 84 : हे रावण ! जो मनुष्य रात्रि को अंधेरे में भोजन करे अथवा भोजन करते समय दीपक बढ़ जाये और भोजन किये जाये तो इस दोष के कारण धन, सन्तान का सुख नहीं देखे क्योंकि ऐसे समय भोजन प्रेत के संग भोजन करने के समान है।

नीति 85 : हे रावण ! जो मनुष्य अपने सिर की बंधी हुई पग किसी को बख्शे तो बड़ा दोष है क्योंकि उसकी बुद्धि घटकर लेने वाले की बुद्धि बढ़ती है।

नीति 86 : हे रावण ! दक्षिण की ओर पांव करके सोना बड़ा अशुभ है।

नीति 87 : हे रावण ! लड़की चार वर्ष की पार्वती, 6 वर्ष की देवकन्या और 9 वर्ष की कन्या कहलाती है। इन अवस्थाओं में लड़की का विवाह करे तो यज्ञ के समान है और 13 वर्ष से ऊपर अवस्था बीतने पर विवाह करे तो महादोष है।

नीति 88 : हे रावण ! जो मनुष्य सिर पर अंगोछा बांधे और अकक्ष रहे तो उसके सब पुण्य नाश होकर पाप के फांस में बंधकर अन्तकाल नरक में जाता है। उसके पितृदेव नरक वासी होते हैं क्योंकि उसका पृथ्वी पर डालना उस पर पांव धराना है।

नीति 89 : हे रावण ! बासी जल से तर्पण करना लहू के समान है इस पाप के कारण नरक में जाके लहू से भरे हुए कुण्ड में वास करना होता है।

नीति 90 : हे रावण ! हाथ, कान, गले में सोना पहनना उत्तम होता है क्योंकि स्नान करने के समय जो जल सोने से लगके शरीर पर पड़ता है सो गंगा जल के समान है।

नीति 91 : हे रावण ! गंगा आदि तीर्थ में स्नान के पहले धोती धोना महादोष है।

नीति 92 : हे रावण ! कुटुम्ब में से कोई मनुष्य तीर्थ जाये तो उसको चाहिये कि प्रथम स्नान करे तो तर्पण का फल होता है।

नीति 93 : हे रावण ! जो बीमार गंगाजी या अन्य तीर्थ में मृत्यु पावे और उसको जो अधजला रख क्षेत्र में बहावे तो महादोष है और अन्त में नरकवासी होता है। उससे उसको भस्म करके 7 दिन भस्म की चौकी करे, गऊ के सिवाय कुत्ता, बिल्ली आदि तथा चौपाए और स्त्री की परछाईं भस्म पर न पड़ने देवे फिर आठवें दिन स्नान करके

भस्म क्षेत्र में पधरावे और क्षेत्र की मृत्तिका ले शुद्ध करे तो जगत के सब तीर्थ के स्नान और बड़े-बड़े यज्ञों का फल पाता है और वह मृतक बैकुण्ठ में जाकर दाहक को महाआशीर्वाद देता है।

नीति 94 : हे रावण ! मेघ बरसने के समय सूर्य उदय हो तो उस समय का स्नान गंगा स्नान के समान होता है जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं होता।

नीति 95 : हे रावण ! सूर्यास्त के समय भोजन करना या जल पीना महादोष है क्योंकि उस समय सूर्य और दैत्यों में युद्ध होता है इसलिए मनुष्य को चाहिए कि संध्या समय त्रिलोकी नाथ के ध्यान स्मरण के सिवाय और कोई काम न करे। जो सूर्य को जलार्पण न करे सो बहुत दिन निर्धन और दुखित रहे। इस पर भी ध्यान रखना चाहिए कि मध्याह्न समय, चार घड़ी दिन से चार घड़ी रात तक तथा प्रातः काल भी इस तरह सोना महा अशुभ है। जो इन दोनों समय परमेश्वर के ध्यान स्मरण में मन लगाये रहे और पुराण का पाठ करे तो समस्त पाप से मुक्ति पाकर सुख में वास पावे और संताप न हो।

नीति 96 : हे रावण ! जो मनुष्य हाथ पर रोटी धरके खाय यो थोड़े ही काल में दरिद्र हो जाता है।

नीति 97 : हे रावण ! जो मनुष्य और के धन, सन्तान को देखकर रिसाय सो इस लोक में निर्धन हो परलोक में नरकवासी होकर अगले जन्म में निपुत्र होता है।

नीति 98 : हे रावण ! जिस मनुष्य को लड़के बाले न हों संसार में सुख न पाकर अन्त में नरकवासी हो दूसरे जन्म में भी निपुत्र रहता है।

नीति 99 : हे रावण ! जिस स्त्री को बालक पैदा हुआ हो, उसके हाथ का 45 दिन तक अन्न-जल खाये तो उसके पितृदेव अधोगति में जायें। यह सुन रावण ने प्रश्न किया कि हे दीनदयालो ! जो मनुष्य निर्धन और अकेला हो तो किस प्रकार इस दोष से बचे। शिवजी बोले-12 दिन पीछे गंगा जल से स्नान करे, जो सामर्थ्य हो सो पुण्य दान करे तो दोष नहीं है। यह नीति सुनकर रावण बोले कि हे कृपासिन्धो ! यह वार्ता सुनकर दीपक के समान उजियाला हुआ, कृपा करके कुछ और नीति दीजिये।

नीति 100 : हे रावण ! यदि मनुष्य चित्त से कुछ दान पुण्य करे तो अधिक फल पाता है और यदि क्रोध कर दान लेने वालों को दुखी करे तो पुण्य निष्फल होकर पातकी होता है।

नीति 101 : हे रावण ! यदि मनुष्य अपने बेटे को किसी को गोद देवे तो उस पुत्र के हाथ का जल उसको नहीं पहुंचता और कदाचित दिये पुत्र को फेर लेवे तो पुत्र जवान होकर मर जाता है या उसके बदले दूसरा पुत्र और अगले जन्म में धन संतान का सुख नहीं पाता और नरक का बासी होता है। यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे जगदीश ! कोई अज्ञानी गर दिये पुत्र को फेर लेवे तो इस पाप से कैसे मुक्ति पावे ? शिव जी ने कहा कि वह मनुष्य अपनी स्त्री और पुत्र सहित श्री गंगाजी में स्नान करके पीली लाल व घूमर गौ दूध देने वाली ब्राह्मण को दान करे और परमेश्वर को दण्डवत् करके अपराध क्षमा करावे तो इन पापों से मुक्ति पावे और अपने पुत्र के हाथ

का दिया पावे।

नीति 102 : हे रावण ! यदि मनुष्य युद्ध करते असमर्थ होकर दूसरे की शरण में आवे और उस समय कदाचित् वह मनुष्य शरणागत जीव को मारे अथवा घायल करे तो उस पाप से उसके पुत्र जवान होकर निर्धन हों, स्त्री बांझ हो।

नीति 103 : हे रावण ! यदि मनुष्य कागज अथवा लकड़ी पर मनुष्य आदि का चित्र बनावे तो इस लोक या परलोक में धन संतान का सुख न देखे, आंखों से अंधा हो।

नीति 104 : हे रावण ! यदि मनुष्य के वचन उच्चारण में थूक बाहर आवे और दूसरे पर पड़े तो अगले जन्म में शूकर की देह पाकर अन्त में नरक में जाता है।

नीति 105 : हे रावण ! यदि मनुष्य अपने स्वामी की आज्ञा को सुनकर ध्यान न धरे तो महादु:खी हो नरक में जाये क्योंकि स्वामी की अवज्ञा करना महापाप है। यह सुन रावण ने प्रश्न किया कि हे यदुनाथ ! यदि स्वामी ऐसी चाकरी फरमावे जो सेवक से नहीं बन पड़े तो कैसे पाप से मुक्ति पावे। शिवजी ने कहा कि ऐसी कठिन चाकरी न बन पड़े तो जिस दिन स्वामी ने आज्ञा करी उसी दिन से जब तक दूसरी बार किसी काम की आज्ञा न देवे तब तक सेवक उस काम को मन लगाकर करे या उतने दिन का तलब स्वामी से न लेवे तो दोष दूर हो जाये। कदाचित् उतने दिन का तलब लेवे तो धन का सुख नहीं पावे और अंतकाल यम के दूत उसको बड़ा दुख देके उस तलब को उलटा फेर लेते हैं। यह सुनकर रावण ने पूछा कि हे जगदीश ! सेवक स्वामी की चाकरी में चूक पड़े और सेवक निर्धन होय अथवा उसकी तलब फेर देने की सामर्थ्य न हो तो कैसे इस दोष से मुक्ति पावे ? शिवजी ने कहा कि तलब का चौथाई पुण्य करके दयालु परमेश्वर से अपना अपराध क्षमा करावे तो इस दोष से मुक्ति पावे और सदा सुखी रहे।

नीति 106 : हे रावण ! यदि मनुष्य हवेली, तालाब, कुआं आदि कोई मकान बनवाये और अधबने मकान के अन्दर या धरती पर बैठकर भोजन करे तो महादोष है। इसलिए मनुष्य को उचित है कि जब सम्पूर्ण मकान बन चुके तब स्त्री सहित प्रतिष्ठा करके परिक्रमा करे और ब्राह्मण को भोजन करवा गोदान करे तो अश्वमेघ यज्ञ समान फल हो और परम सुख पावे।

नीति 107 : हे रावण ! यदि मनुष्य तीर्थ यात्रा को जावे और रास्ते में किसी के यहां मेहमानी खाये तो महादोष है। जन्मभर संसार के पदार्थों से विमुख रहे और यात्रा निष्फल जाये क्योंकि यात्राफल, खिलाने वाले को प्राप्त होता है। यह सुनकर रावण ने प्रश्न किया कि हे जगद्गुरो ! रास्ते में कोई भाई या नातेदार मिले और मेहमानी करे तो किस प्रकार दोष दूर हो। शिवजी ने कहा कि जाते दफा किसी के यहां न खाये, आती दफा मेहमानी खाये तो दोष नहीं परन्तु तीर्थ व देवस्थान में भूलकर भी किसी भाई या नातेदारों की मेहमानी न खाये। कदाचित् वे लोग हठ करें तो स्नान, यात्रा से निश्चिंत हो तीर्थ की परिक्रमा कर चलती दफा मेहमानी खाय और उससे बीस गुना ब्राह्मण को खिलावे तो दोष जाये और यात्रा सुफल हो।

नीति 108 : हे रावण ! यदि मनुष्य पक्षियों के घोंसले से छोटे-छोटे बच्चों को बाहर निकाले तो इस जन्म में दरिद्र हो और उसके पुत्र जवान होकर मर जाएं और अन्तकाल नरक में जाय फिर अगले जन्म में धन संतान का सुख न पावे। क्योंकि पक्षी छोटे बच्चों को फिर नहीं पालते, भूखे प्यासे ही मर जाते हैं इसलिये वह अपराध उस मनुष्य का होता है।

नीति 109 : हे रावण ! यदि स्त्री या पुरुष रोते हुए बालक को मारे तो नरक में जाये और सब पदार्थ से विमुख होके निपुत्रा रहे कदाचित् पुत्र होय भी तो मर जाय और उस पाप से पितृदेव बैकुण्ठ से नरक में जायें।

नीति 110 : हे रावण ! यदि मनुष्य बिना मुंह धोये पान या दूध आदि कुछ खाय और स्वामी की वस्तु दाम बिना ले जाये तो इस जन्म में महादुखी हो।

नीति 111 : हे रावण ! रूख का कच्चा फल तोड़ना बड़ा दोष है। फल पकने पर तोड़े तो दोष नहीं।

नीति 112 : हे रावण ! यदि मनुष्य चाकरों की तलब और नेगिन का नेग नहीं देता सो इस लोक में भलाई नहीं पाता और इस पाप से जन्म भर दुखी और निपुत्र ही अंतकाल नरक में जाता है। कदाचित् उसके पितर स्वर्गवासी हों तो नरक में पड़ते हैं।

नीति 113 : हे रावण ! यदि मनुष्य दान की वस्तु पात्र में लेके और पात्र को हाथ में ले तो संकल्प में आ जाता है इसलिए वह पात्र भी देना चाहिये और हाथ के बदले में जब तक सुवर्ण, चांदी या तांबा का हाथ बनवा के ब्राह्मण को न देवे तब तक यदि खाना-पीना या सुकर्म हाथ से करे तो फलदायक नहीं होता ! रावण ने प्रश्न किया कि ये दयानिधान ! जिसको हाथ और पात्र देने की सामर्थ्य नहीं हो सो किस प्रकार इस पाप से मुक्ति पावे ? शिवजी ने कहा कि मनुष्य को चाहिये कि अनपढ़ और मूर्ख ब्राह्मण को श्रद्धा हो तो दूर ही से देवे, पुण्य का संकल्प करे तो विद्वान को दोष नहीं होता है।

नीति 114 : जिस नर की नारी मरे, करे दूसरा ब्याह। ना देखे संसार में, सुख सम्पत्ति सुत आह।। यह सुन रावण ने कहा, नो हे प्रभु दयानिधान। याको कारण कौन है, कहिये सुख के खान।। कह्यो शिव तेहि हेतु ही, ध्यान धरो मन माहिं। ब्याह करे सुतहीन नर, तो कुछ दुःख है नाहिं।। पर जिस नर को पुत्र हों, बहुरि करै न ब्याह। पावै दुख संसार में, डुबे समुद्र अथाह।।

चौपाई : जब दूजी घर नारी आवे। प्रथम नारिके पुत्र न भावै। जो माता सम करै न प्रीति। रहे निपुत्री जग में मीती। बहुरि नरक में जाकर परही। बहुत प्रकार परम दुख सहही।

दोहा : इक इक बार के देवता, न्यारे न्यारे जान। तिनकी पूजा जो करे, पावै सो सनमान।। सुत सम्पत्ति को परम सुख, पावै सो जग मांह। अन्तकाल बैकुण्ठ बसि, पावै सुख की छांह।।

नीति 115 : दोहा : जो नर रोटी आज की, अगले दिन में खाय। सदा रहे बेकार वह, अन्त नरक में जाय। रहें दुखी संसार में, उसके पुत्र निदान। यह सुन रावण ने कहा,

हे प्रभो ! जो कुनवा में बचे, बहुत प्राप्त को आज। तो कैसे या पाम सों, पावैं मुक्ति दराज।। कह्यो कृपासिन्धु ने हे हितू, मीठाई पकवान। खावे तो दोषी नहीं, रोटी में मत जान।। इन बासी रोटीन का खाना दुःख उपजाय। सबै पात्र के शामते, वह नर सुख नहिं पाय।।

चार व्याधि उत्पन्न हों, जामें बासी खाया। आदिहि बुद्धि हानि हो, दूजे तन आजाय। तीजा वह बलहीन हो, चौथे खोजे घाट। इतने लक्षण होइके, होवे बारह बाट।।

नीति 116 : हे रावण ! जो मनुष्य इतनी बातों को लेकर अपने चित्त से कभी न्यारा नहीं करता, सो इस लोक और परलोक में परम सुख पाकर ईश की सेवा में हंसमुख और निर्लोभ रहे, सो नौकरों के मन को सदासुखी रखकर जीवन बिताता है।

॥ इति ॥